आया तूफ़ान

शारलेट

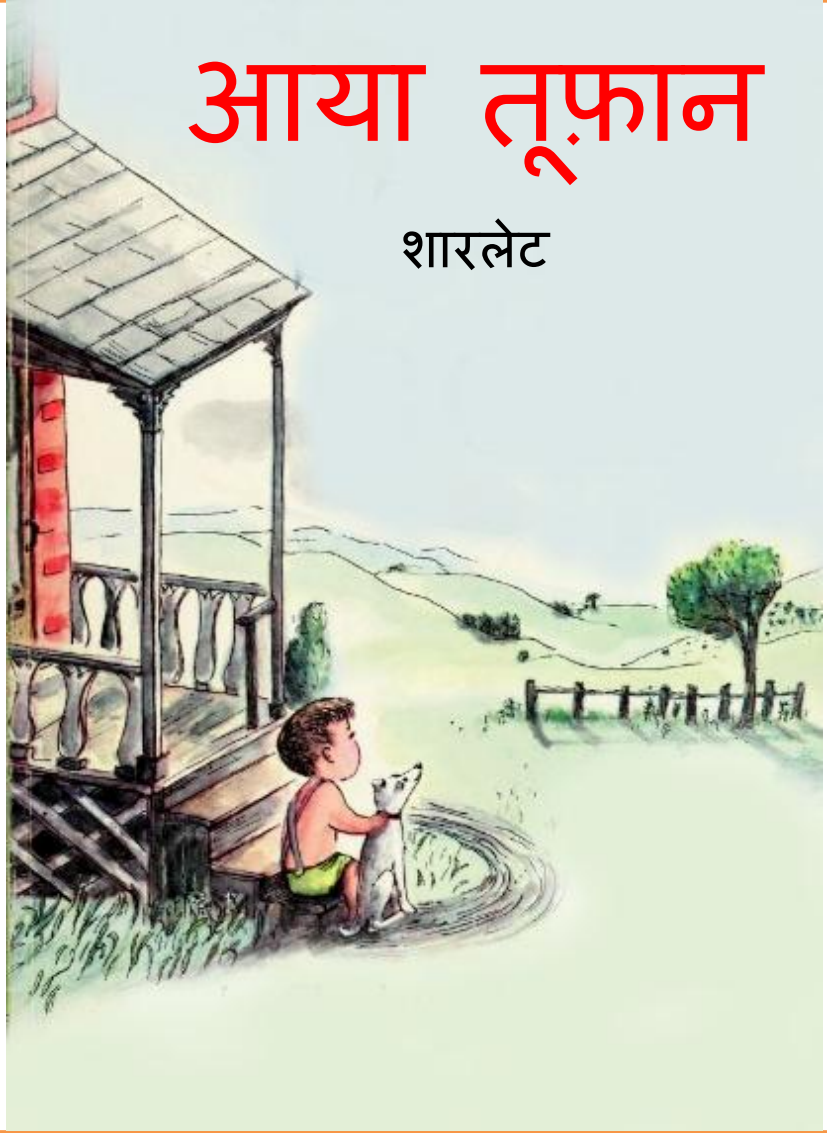

आया तूफ़ान

शारलेट

एक गाँव में एक दिन. गर्मी बहुत ज़्यादा है. घास सूखकर झुलस-सी गयी है. धूल में लिपटे बटरकप के फूल चिपचिपे हो गये हैं; डेज़ी फूलों की सफ़ेद पंखुडियां धूमिल हो गयी हैं. अन्य फूल भी, चाहे फाटक पर चिपके गुलाब हों या दीवार पर चढ़े गुलखैरा हों, मुरझाये से लग रहे हैं.

इस गर्मी में छोटे लड़के को हवा भी थरथराती से लग रही है. एक नन्हा कैटरपिलर धीरे-धीरे धूल से भरी घास की पत्ती पर चढ़ता है और फिर नीचे उतरता है. चिलचिलाती गर्मी में सब कुछ शिथिल-सा हो गया है. सफ़ेद कुत्ता भी डयोढ़ी के अंदर, छाया में लेटा, सो रहा है. गर्मी से त्रस्त सब पक्षी खामोश हैं, पेड़ों से किसी की आवाज़ नहीं आ रही है.

लेकिन धीरे-धीरे धुँधले आकाश में परिवर्तन आने लगता है. सूर्य का चमकता प्रकाश मध्यम होने लगता है. सब कुछ धूमिल हो जाता है. सब कुछ ठहरा-सा लगता है. पक्षी भी चुप हैं. हवा में हल्की-सी सरसराहट भी नहीं है, एक पत्ता तक नहीं हिल रहा. लेकिन ऐसा प्रतीत होता है कि उस बढ़ते अंधकार में कुछ होने वाला है, कुछ है जो गतिशील है. सब कुछ शांत होते हुए भी उस छोटे लड़के को लग रहा है कि कुछ घटित होने वाला है.

वह प्रतीक्षा करता है और देखता है कि आकाश में बादल उमड़ रहे हैं. बादलों की छाया धीरे-धीरे सूखे खेतों पर फ़ैल रही है. फिर आकाश बादलों से घिर जाता है और दिन में ही रात-सा अँधेरा हो जाता है. पहाड़ी से नीचे आती हवा की ठंडी लहर पेड़ों से होती हुई, गुलाब और डेज़ी और बटरकप के फूलों को छूती हुई, सब तरफ फ़ैल जाती है.

तभी कुछ घटता है! आकाश के एक के छोर से दूसरे छोर तक बिजली की चमक इतनी तेज़ी से फैल कर लुप्त हो जाती है कि तूफानी हवा में झूलते फूलों को लड़का देख भी नहीं पाता.

“ओह, माँ,” वह चिल्लाया, “वह क्या था?”

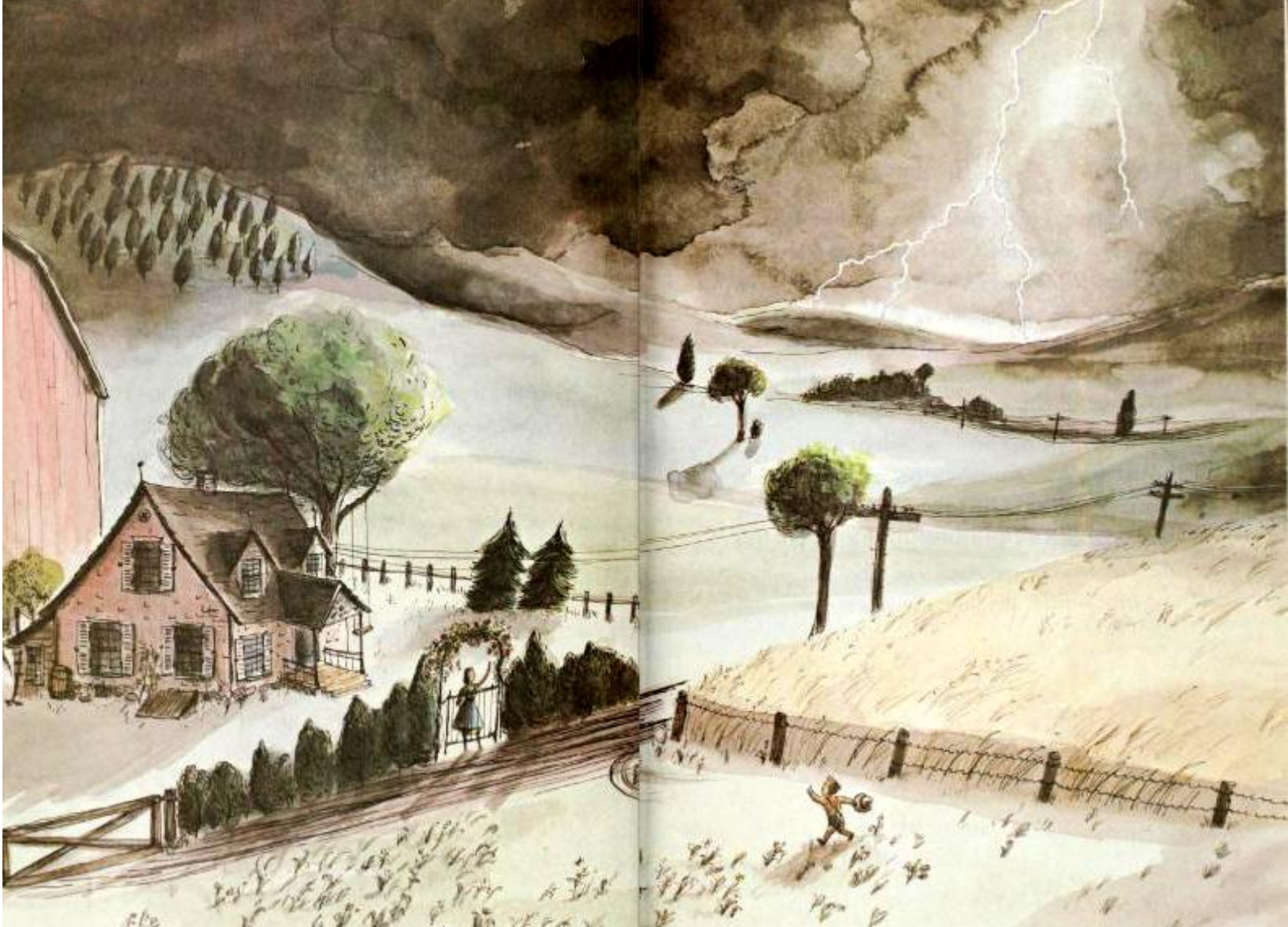

“बिजली चमकी थी,” माँ ने कहा, “वैसे ही जैसे हमारे लैंप में चमकती है.” छोटा लड़का लैंप के विषय में सोचता है, जिसका सुनहरी प्रकाश उसके कमरे में चमकता है. फिर उसने आकाश में चमकने वाली बिजली के बारे में सोचा. आकाश में चमकती बिजली उस सफ़ेद भेड़िये जैसी थी जो जंगल में स्वतंत्र घूमता रहता है. लैंप का प्रकाश उस पालतू सफेद कुत्ते जैसा था जो बुलाने पर उस लड़के के पास दौड़ा आता था.

अब दूर पहाड़ियों के पीछे से गड़गड़गड़ड़ड़ड़ड़ड़ड़ड़ड़ड़ड़ ड़ड़ड़ड़ बिजली कड़कने की आवाज़ आती है.

“वह क्या है?” उसने चिल्ला कर माँ से पूछा.

“जब बादल एक-दूसरे से टकराते हैं तो ऐसी गड़गड़ाहट की आवाज़ आती है,” उसकी माँ ने कहा. उस अँधियारे में सब कुछ फिर खामोश है, सब कुछ ठहरा हुआ है. और तभी आँखों को चकाचौंध करने वाली बिजली सारे आकाश में चमक उठती है.

जैसे-जैसे बिजली के गड़गड़ाने की आवाज़ निकट आती है अँधेरा बढ़ जाता है. फिर अचानक बादल गरजते हैं. ठीक सिर के ऊपर एक ज़ोर का धमाका होता है और पानी बरसने लगता है. वर्षा और आंधी के प्रभाव में डेज़ी के फूल ज़मीन तक झुक जाते है. बड़े-बड़े पेड़ भी आंधी और बारिश में इधर-उधर डोलने लगते हैं.

उस गाँव से कई मील दूर, तूफ़ान की चपेट में आया एक नगर अंधकार में डूब जाता है. उस नगर में एक युवक अपनी किताब बंद कर, खिड़की के पास आकर बाहर देखता है. नीचे सड़क पर जमा बारिश के पानी में दूकानों की रोशनी चमक रही है. आकाश में कड़कती बिजली के प्रकाश में सड़क पर भागते हुए लोग दिखाई पड़ते हैं. उन्होंने अपने सिरों के ऊपर अख़बार रखे हैं या फिर बारिश और आंधी से बचने के लिये अपने सामने छाते कर रखे हैं.

ऊंची-ऊंची इमारतों के शिखर उस अँधकार में हवा में लटके-से दिखाई पड़ते हैं. गोल जालियों में बंद छोटे-छोटे पेड़ धरती से उखड़ते हुए लगते हैं और आंधी में उनके पत्ते लगातार फड़फड़ाते हैं. सड़क पर चलती गाड़ियों के टायर सर्रर्रर्रर्र की आवाज़ कर रहे हैं.

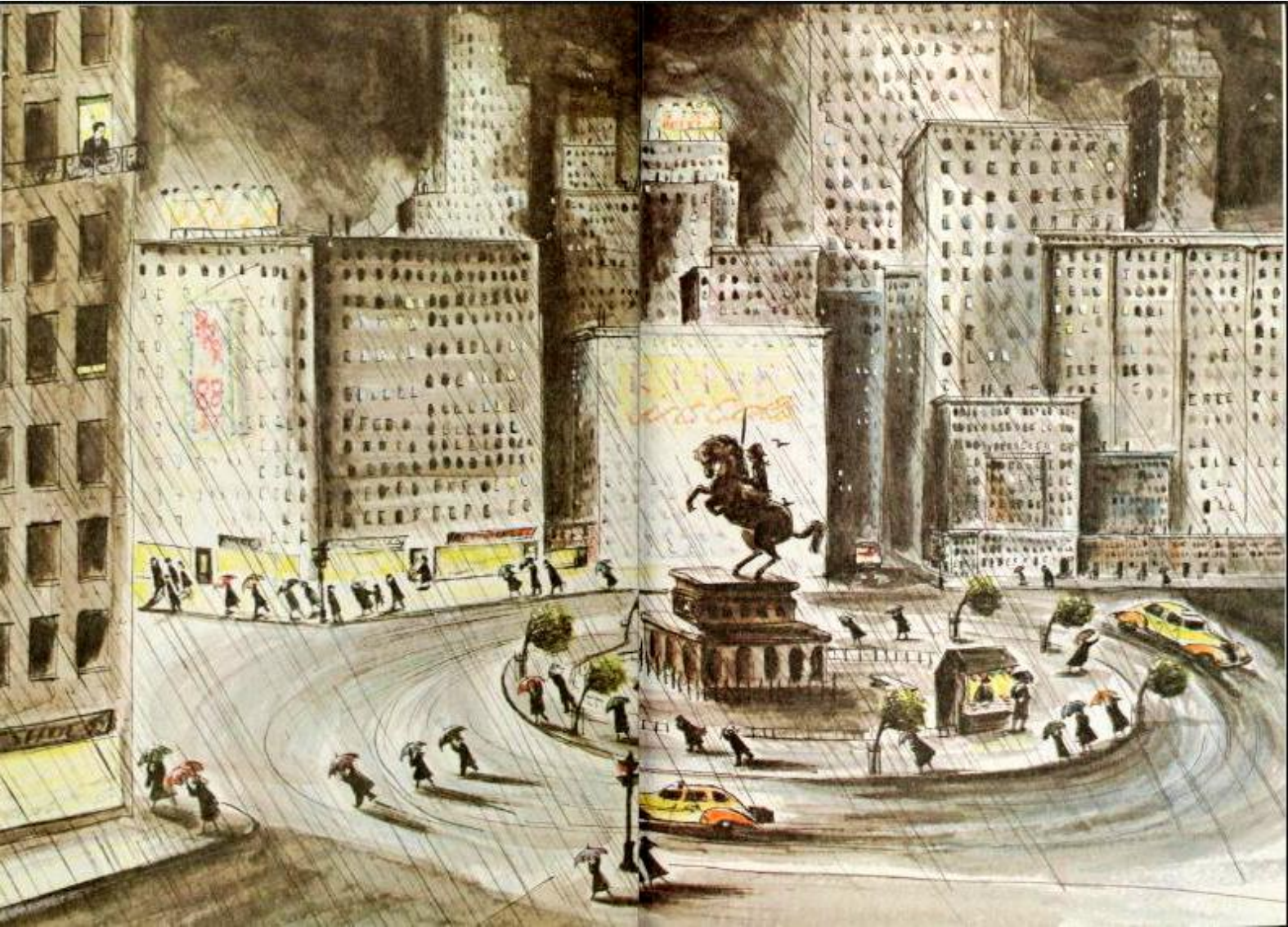

सागर के किनारे एक बूढ़ा मछुआरा उमड़ती लहरों में खड़ा है. उसके मोमजामे पर आंधी और बारिश के धपेड़े पड़ रहे हैं. वर्षा और सागर की उछलती लहरों ने उसके चेहरे को पूरी तरह भिगो दिया है. जब बिजली कड़कती है तब उसकी गर्जन में कुछ सुनाई नहीं देती, न उछलती लहरें की आवाज़ सुनाई देती हैं और न ही मोमजामे पर बरसती बूंदों की आवाज़. ऐसा लगता है कि बिजली की लगातार चमक और गर्जन के अतिरिक्त संसार में कुछ भी नहीं है.

एक बार फिर बिजली चमकी; एक छोटा, भूरा सैंडपाइपर जो घर लौट रहा है, फिसल जाता है. वह इतनी तेज़ी से फिसलता है कि बिजली की चमक के लुप्त होने से पहले ही वह कहीं गुम हो जाता है.

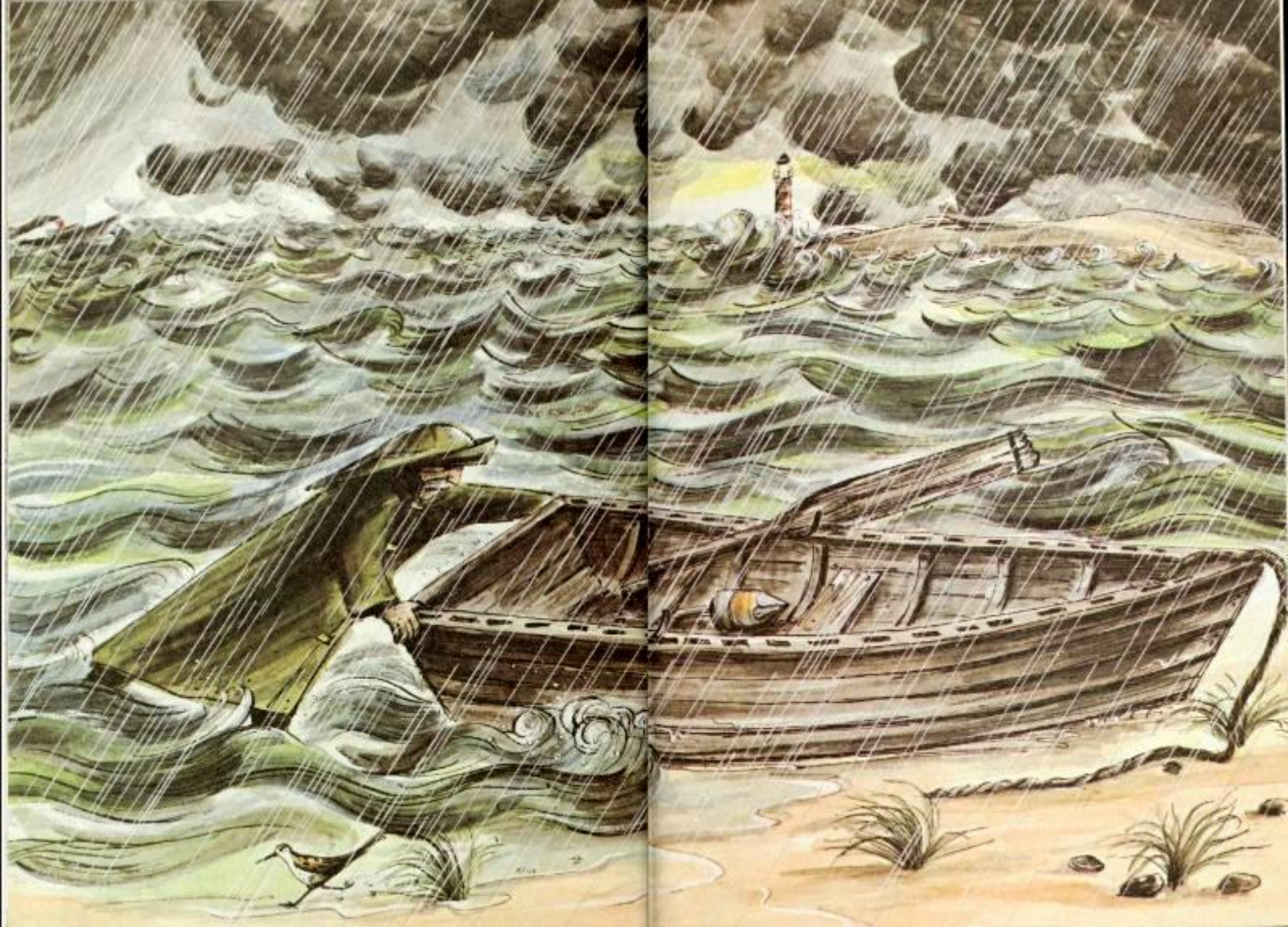

पहाड़ों में वर्षा ऐसे बरसती है जैसे की कोई झरना बह रहा हो. हर बार जब बिजली कड़कती है तो लगता है कि पहाड़ की चट्टाने फटी जा रही हैं. लेकिन बिजली की हर चमक में वह चट्टानें शांत और द्रढ़ दिखाई पड़ती हैं.

एक युवक अपनी भेड़ों को हांक कर उनके बाड़े में ले आता है. उसकी पत्नी खिड़की से तूफ़ान में घिरी पहाड़ियों को देखती है. उसका नन्हा शिशु उसकी बाहों में निश्चिंत सोया हुआ है.

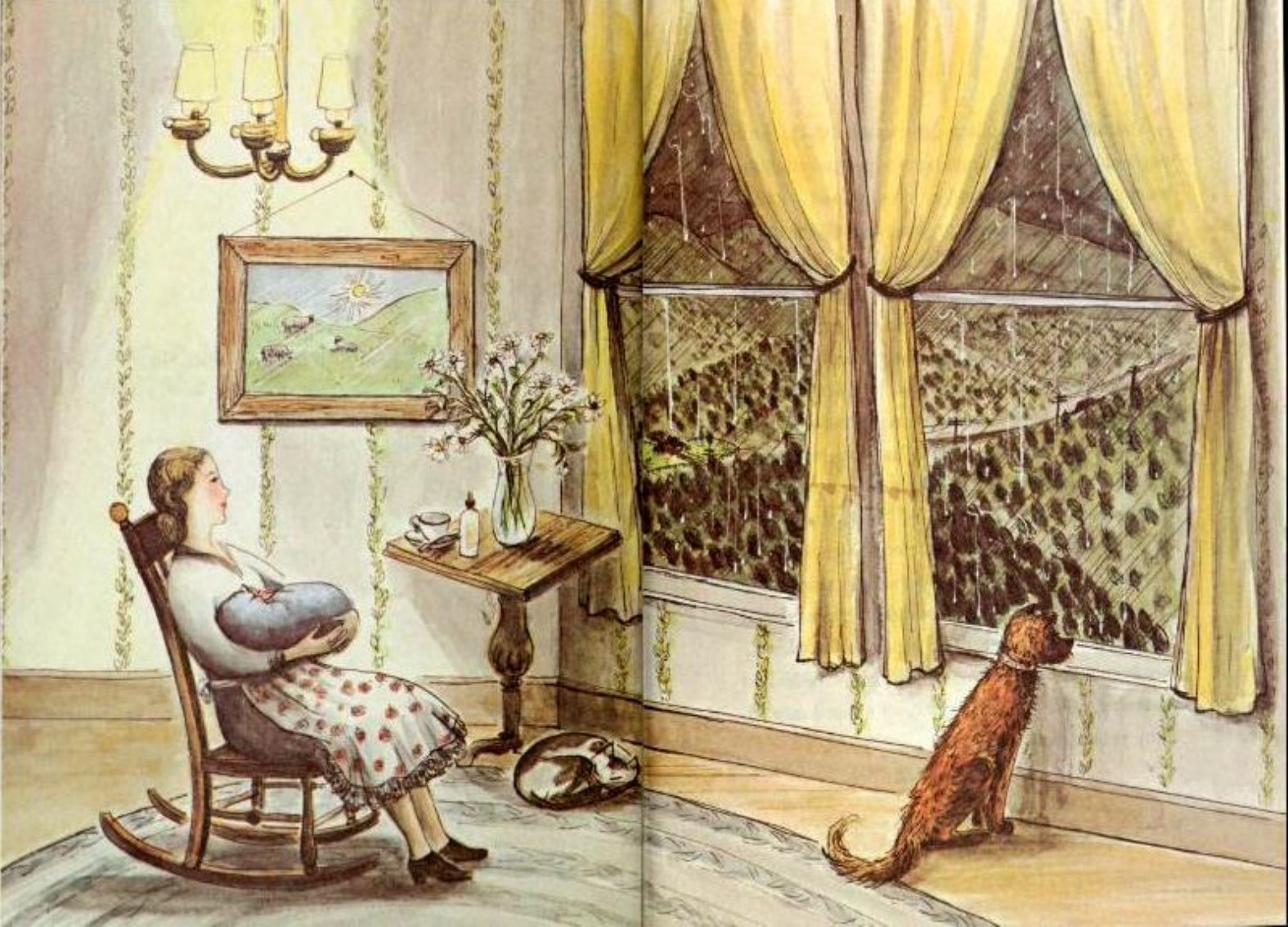

छोटे लड़के के घर की खिड़कियों पर बारिश बरस रही है. घर की छत पर बूंदों के गिरने से लगातार टपटप की ज़ोरदार आवाज़ आ रही है. पेड़ों से गुज़रती हुई तेज़ हवा की आवाज़ ऐसी लगती है कि जैसे तट पर सागर की लहरें टकरा रही हों.

धीरे-धीरे तूफ़ान थमने लगता है. आकाश में अँधेरा कम होने लगता है. बिजली की गर्जन दूर जाने लगती है. जैसे-जैसे बादल छटने लगते हैं और प्रकाश बढ़ने लगता है और आंधी की गति घटने लगती है, लड़के को बादलों की गड़गड़ाहट अब दूर से आते सुनाई देती है. छत पर वर्षा की टपटप आवाज़ धीमी पड़ने लगती है, फिर और धीमी हो जाती है और धीमे होते-होते रुक जाती है. हवा अब स्वच्छ और ताज़ा है. और उसमें गीली मिट्टी की सुगंध है.

तेज़ आंधी और बारिश में गुलाब की ढेरों पंखुड़ियां बिखर कर ज़मीन पर फ़ैल गयी हैं. बारिश में भीगे डेज़ी के फूल अभी भी झुके हुए हैं और उनकी गीली सफेद पंखुड़ियां आपस में चिपकी हुई हैं. लेकिन बटरकप के फूल सीधे होकर, अपनी सुन्दरता बिखेर रहे हैं. उनकी पंखुड़ियों और कलियों पर अटकी वर्षा की बूँदें चमक रही हैं.

पीले रंग का एक अनोखा प्रकाश धरती पर हर ओर फैल जाता है, यह प्रकाश इतना हल्का है और इतना सुंदर है कि छोटा लड़का आश्चर्यचकित-सा हो जाता है. सीटी-सी बजाते हुए वह बड़े धीमे से सांस छोड़ता है. अचानक सब पक्षी चहचहाना शुरू कर देते हैं. पेड़ों की गीली, चमकती पत्तियों से विभिन्न पक्षियों के बोलने और गाने की आवाज़ें सुनाई देने लगती हैं.

झिलमिलाती घास में यहाँ-वहाँ फुदकती चिड़िया कीड़े तलाश करने लगती है. अब घर, पेड़, पौधे, घास का खुला मैदान सब प्रकाशित हो रहे हैं. घर के दरवाज़े पर खड़े छोटे लड़के का चेहरा भी प्रकाश में चमक रहा है.

“वह क्या है?” उसने अचानक चिल्ला कर माँ से पूछा. वह दरवाज़े के निकट आती है. वह आकाश में फैले विशाल रंगबिरंगे वृताकार को देखती है. जितनी दूर हम देख सकते हैं वहां से भी दूर है इस सतरंगी रोशनी का एक सिरा. आकाश में घूमता हुआ, पहाड़ों और पेड़ों के ऊपर होता हुआ और नगर को पार करता हुआ, उसका दूसरा सिरा उस ओर है जहां उस छोटे लड़के का घर है.

“यह तो इन्द्रधनुष है, बेटे,” माँ ने कहा. “इसके आने का अर्थ है कि तूफ़ान समाप्त हो गया है.”

इतना कह माँ ने इतने प्यार से उसे बांह में भर लिया कि उसे अहसास तक न हुआ. वह मंत्रमुग्ध-सा आकाश में इस ओर से उस ओर तक फैले सतरंगी इन्द्रधनुष को देखता रहा.

गर्मियों के दिनों में गाँव,
शहर और समुद्र किनारे
एक भयानक तूफ़ान
आता है. जानवर और
लोग दोनों बादलों की
गर्जन और बारिश की
आवाज़ सुनते हैं. और
उसके बाद कुछ अनूठा
होता है.

बच्चों की पुरुस्कृत
किताब.